सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग १३)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपने जीवन में सद्गुणग्राहिता पा लेते हैं तब अपना कल्याण होना निश्चित हो जाता है।

When we internalise the disposition of sadguṇagrāhitā in our lives, our salvation becomes certain.

Sadguṇagrāhitā - willingness to grasp the virtues of others

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सद्गुणग्राहिता यानी अन्य जीवों के गुणों के प्रति आदर और प्रीति। इससे वे गुण अपने-आप हममें खिलना शुरू हो जाते हैं और गुणों के प्रति आदर से पुण्य भी बन्धता है।

Sadguṇagrāhitā means respecting and being fond of the good qualities in others. When we respect and love the good qualities of others, their good qualities begin blossoming inside us. Admiring and respecting the good qualities of others also leads to the inflow and bondage of puṇya.

Sadguṇagrāhitā - willingness to grasp the virtues of others

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दूसरों की निन्दा करने से उनके अवगुण हममें खिलना शुरू हो जाते हैं और हमें निन्दा का पाप भी लगता है। उससे अपना कोई भी फ़ायदा नहीं होता।

When we criticise others, their flaws begin to develop inside ourselves. We also commit the sin of criticising others and bondage pāpa. Thus, there is no advantage in criticising others.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दूसरों के अवगुण देखकर अपने में झाँकना है, अगर हममें वे अवगुण हैं तो उन्हें निकाल देना है और उनके प्रति करूणा का भाव रखना है। इस तरह हमें दूसरे के अवगुण से भी अपना फ़ायदा उठाना है।

On seeing flaws in others, we must seek within ourselves. If we have the same flaws, we must get rid of them and keep the disposition of compassion towards others. In this manner, we should use the flaws of others to better ourselves.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वैराग्य यानी बाहरी लगाव कम होना। सांसारिक आकांक्षाओं का कम होना। पर से सुख का भ्रम टूटना।

Vairāgya means the lessening of external attachments, the lessening of worldly desires, and the removal of the erroneous understanding that happiness comes from external factors.

Vairāgya — the lessening of external attachments, worldly desires, and the removal of the erroneous understanding that happiness comes from external factors

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधक की चारों कषायें क्रमशः मन्द होती हैं। पहले क्रोध की मन्दता होती है, फिर मान, फिर माया और अन्त में लोभ मन्द होता है।

The four passions of the seeker weaken sequentially. First, anger weakens. Then, arrogance, then, artifice. Avarice is the last one to weaken.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्मोपदेश या फिर अन्य कोई भी उपदेश, सुननेवाले की भूमिका के अनुसार ही दिया जाता है। अन्यथा वह उसे ग्रहण नहीं कर पायेगा।

Religious teachings, or any other form of inspiration, is given strictly in accordance with the listener's capacity. Else, he will not be able to grasp it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मन की वर्तमान परिस्थिति को भलीभाँति समझकर उसे पूरी सतर्कता के साथ सुधारने का प्रयास करना ही साधना है। साधना अनवरत चलती है — २४ x ७ x ३६५। सच्ची साधना साधक के जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है।

Sādhanā means understanding one's current state of mind and trying to correct it with full awareness. Sādhanā is constant — 24 x 7 x 365. True sādhanā improves all aspects of life.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधक संसार में रहकर भी संसार से परे रह सकता है, आसक्त नहीं रहता।

The seeker can remain in saṁsāra and still remain away from it because he is not attached.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वैराग्य की परिपूर्णता मोक्ष में है। वैरागी संसार से कोई भी अपेक्षा नहीं रखता। वह सहज रूप से अपनी आत्मा में मस्त रहता है।

Detachment finds its completion in mokṣa (liberation). One who is detached does not expect anything from saṁsāra. He effortlessly and joyfully remains immersed in his soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

भले कोई करोड़ों लोगों से भी ज़्यादा भाग्यवान हो, यह ज़रूरी नहीं कि वह मोक्षमार्ग पर चलने की समझ रखता हो। इसलिये मोक्षमार्ग पर चलने का विवेक रखना भाग्यवान होने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

Although someone may be more fortunate than crores of people, it is not necessary that he would possess the understanding of walking on the path of liberation – mokṣamārga. Hence, possessing the wisdom to walk on the path of liberation is far more important than possessing extraordinary luck.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें अपनी सोच पर काम करना है क्योंकि वर्तमान में जैसी हमारी सोच है प्राय: वैसा ही अपना भविष्य बनता है।

We should work on our thoughts because our future is usually determined by our present thoughts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम दूसरों के बारे में बुरा सोचकर अपना ही नुक़सान करते हैं न कि दूसरों का। क्योंकि दूसरों का अच्छा-बुरा उनके कर्मों के अनुसार होता है न कि हमारी सोच के अनुसार।

When we think ill of others we harm ourselves rather than anyone else. Whether good or bad, what happens to others takes place in accordance with their karma and not in accordance with our thoughts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें सदैव दूसरों के बारे में भला ही सोचना चाहिये, भले ही वे हमारे शत्रु ही क्यों न हों। क्योंकि दूसरों का अच्छा-बुरा उनके कर्मों के अनुसार होता है न कि हमारी सोच के अनुसार।

We should always wish good things for others even if they are our enemies. Whether good or bad, what happens to others takes place in accordance with their karma and not in accordance with our thoughts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) पाने के लिये सर्वप्रथम सभी जीवों के साथ भाव-मैत्री करनी चाहिये। वैसे भी, समाज में जिसे बड़ा बनना होता है उसे भी सभी से मैत्री का दिखावा करना पड़ता है। तब यह तो आत्मा को पाने की बात है। यहाँ तो सच्चे दिल से सभी जीवों के साथ भाव-मैत्री करनी ही पड़ेगी।

To attain samyagdarśana (knowledge of the self) we must first of all build heartfelt friendship with all living beings. Even those who want to become famous in society have to pretend to be friends with everyone. In this case, we are talking about experiencing the eternal soul. Here, one shall have to develop the most genuine heartfelt friendship with every living being.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे दिल से सभी जीवों के साथ भाव-मैत्री करने से अपने द्वेष का शमन होता है। अपना मन शान्त होता है और शान्त मन से ही जीव अपने हित-अहित के बारे में सोच सकता है।

By developing the most genuine heartfelt friendship with all living beings, we pacify our aversion and hatred and attain a calm state of mind. Only a calm state of mind allows us to reflect upon what is truly beneficial or harmful to us.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे दिल से सभी जीवों से भाव-मैत्री करने से अपने पापकर्मों का बन्ध कम हो जाता है और पुण्य का बन्ध होता है। इससे भविष्य में मोक्षमार्ग पर चलना सुविधाजनक और आसान हो जाता है।

By developing the most genuine heartfelt friendship with all living beings, the bondage of our pāpa karmas reduces and we bind puṇya karmas. This ensures that our future journey on the path of liberation becomes convenient and easy.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अन्याय, अनीति तथा अविवेक हमें भविष्य में दुर्गति और अनन्त दु:ख देने में सक्षम हैं। इसलिये इनसे सदैव बचना चाहिये और न्याय, नीति और विवेकपूर्ण जीवन जीना चाहिये।

Injustice, unethical behaviour and injudiciousness are capable of causing us poor rebirth and infinite pain in the future. Therefore, we must avoid these and lead a life of justice, ethical behaviour and judiciousness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम रोष या द्वेष से किसी को दण्ड देने की सोचते हैं या दण्ड देते हैं, तब हम अपने लिये भविष्य में दुर्गति और अनन्त दु:ख का ही आरक्षण कर लेते हैं।

When, out of anger or hatred, we think of punishing others or actually punish them, then we reserve for ourselves a poor rebirth and infinite pain in the future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम रोष या द्वेष से किसी का अपमान करने की सोचते हैं या अपमान करते हैं तब हम अपने लिये भविष्य में दुर्गति और अनन्त दु:ख का ही आरक्षण कर लेते हैं।

When, out of anger or hatred, we think of insulting others or actually insult them, then we reserve for ourselves a poor rebirth and infinite pain in the future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

An ignorant person experiences/feels only his current manifestation, not his eternal self. Hence, when he hears or reads that “I am the pure soul” or “I am the pure soul which is constant and does not change in the past, present and future” or “I am only the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable”, in his delusion he thinks that his current manifestation has all these attributes. He does not realise that they apply to his eternal self, not his current manifestation (worldly form). Consequently, he makes no effort whatsoever on the right path of dharma and instead focuses his efforts on materialistic goals. In this manner, he increases his worldly journey and books only endless sorrows for himself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अज्ञानी व्यक्ति नियम से अपनी पर्याय को ही वेदता/अनुभवता है न कि द्रव्य को। ऐसे में जब वह सुनता या पढ़ता है कि "मैं शुद्धात्मा हूँ" या "मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ" या "मैं परमपारिणामिकभाव मात्र हूँ" इत्यादि, तब वह अज्ञानभाव/भ्रम से अपने द्रव्य रूप को वैसा न मानकर अपने पर्याय रूप को ही वैसा मानने लगता है। इसलिये धर्म में पुरुषार्थहीन ही रहता है और संसार का ही पुरुषार्थ करता रहता है। इस तरह वह अपने संसार की ही वृद्धि करता है, अपने लिये अनन्त दुःखों का ही आरक्षण करता है।

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

"मैं राग-द्वेष रहित, बन्ध-मोक्ष रहित शुद्धात्मा हूँ" यह कथन शुद्ध नय की अपेक्षा से है। मगर कई लोग यह बात निर्पेक्ष भाव से एकान्तपूर्वक बोलते हैं और मानते भी हैं। उन्हें नयों का ज्ञान नहीं, वे अज्ञानी हैं। ज्ञानी जीव की दृष्टि में यह बात अवश्य होती है मगर उन्हें अपनी वर्तमान परिस्थिति का भी यथार्थ ज्ञान होता है। इसलिये ही ज्ञानी जीव के अभिप्राय में सर्वविरति ही होती है और वह अपनी शक्ति के अनुसार व्रत-प्रत्याख्यान भी अवश्य लेता है।

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

I am the pure soul, free from attachment and aversion, free from bondage and liberation" is a statement made from the perspective of the śuddha naya. But some people ignore the context and declare it and accept it as being true from all points of view. They do not know the nayas (aspects of reality) and are ignorant. A self-realised person bears in mind the above statement but also has a clear and correct understanding of his present situation. Hence, the self-realised person fully intends to attain the stage of sarva-virati and he invariabky takes up vows and penance as per his capacity.

Śuddhātmā — pure soul, unfettered by attachment, aversion and the bondage of karmas
Śuddha Naya — absolute/pure aspect of reality
Jñānī Jīva — a self-realised person
Abhiprāya — intention / opinion
Sarva-virati — cessation of all worldly activities
Vrata-Pratyākhyāna — vows and penance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अज्ञानी जीव अपने को शुद्धात्मा मानता हुआ धर्म में पुरुषार्थहीन ही रहता है। वह यह नहीं समझता कि खान से निकलनेवाले स्वर्ण (gold ore) में और शुद्ध स्वर्ण (pure gold) में अन्तर होने के बावजूद दोनों को स्वर्ण ही कहा जाता है, मगर शुद्ध स्वर्ण पाने के लिये खान से निकले स्वर्ण पर कुछ प्रक्रिया अवश्य करनी पड़ती है। उसी प्रक्रिया का नाम आत्मसाधना है।

The ignorant person develops the delusion that he is already the śuddhātmā (the pure soul unfettered by attachment, aversion and the bondage of karmas) and makes no effort whatsoever on the right path of dharma. He does not realise that although both are called gold, there is a vast difference between gold ore and pure gold. Gold ore has to essentially undergo certain processes before it turns to pure gold. These processes are known as ātma-sādhanā.

Śuddhātmā — pure soul, unfettered by attachment, aversion and the bondage of karmas
Ātma-sādhanā — the process of freeing the soul from its baggage of attachment, aversion and the bondage of karmas

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अज्ञानी जीव अपने को शुद्धात्मा मानता हुआ धर्म में पुरुषार्थहीन ही रहता है। ''करना यानी मरना'' मानने लगता है। उसे यह पता नहीं कि "करना यानी मरना" यह बात "पर की कर्तृत्व बुद्धि" छुड़ाने के लिये है न कि स्व (आत्मा) की साधना छुड़ाने के लिये, वह तो मोक्ष पाने तक करनी ही है।

The ignorant person develops the delusion that he is already the śuddhātmā (the pure soul unfettered by attachment, aversion and the bondage of karmas) and makes no effort whatsoever on the right path of dharma. He starts believing that "doing is like dying". He does not realise that "doing is like dying" is said to get rid of the false belief that "we can do something in the non-self", not to prevent oneself from working on self-improvement. One has to work on the self till the time one attains liberation.

Śuddhātmā — pure soul, unfettered by attachment, aversion and the bondage of karmas

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

“मैं शुद्धात्मा हूँ” या “मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ” या “मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" इन सभी कथनों का भावार्थ अज्ञानी यों समझता है कि मुझमें राग-द्वेष हैं ही नहीं, मैं शुद्ध हूँ। क्योंकि अज्ञानी नियम से पर्याय को ही वेदता है, इसलिये अपनी वर्तमान पर्याय को ही ऐसा समझने लगता है।

“I am the pure soul”, “I am the eternal pure soul”, or “I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable” are statements that the ignorant one fails to understand the inner meaning of, leading him to believe that he is pure, unblemished, free from all attachment and aversion. This is because the ignorant person always experiences his current manifestation. So he thinks that his present form has already achieved these ideals.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

“मैं शुद्धात्मा हूँ” या “मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ” या “मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" इन सभी कथनों का भावार्थ न समझकर अज्ञानी इसे एकान्त से लेकर (अपनी वर्तमान पर्याय को ऐसा समझकर) राग-द्वेष कम करने का पुरुषार्थ छोड़कर सांसारिक पुरुषार्थ में ज़ोरों से लगा रहता है।

By misunderstanding the inner meaning of statements like “I am the pure soul”, “I am the eternal pure soul”, or “I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable”, the ignorant one assumes that these axioms are true not from a certain perspective, but completely and absolutely true. So he thinks that his present form has already achieved these ideals and instead of making efforts to lessen his attachment and aversion, he focuses all the more on achieving his temporal objectives.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

"मैं शुद्धात्मा हूँ" या "मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ" या "मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" यह सभी कथन अपने द्रव्य के लिये हैं न कि अपनी पर्याय यानी वर्तमान अवस्था के लिये। अपना द्रव्य त्रिकाल ऐसा है यह कहकर आचार्य भगवन्त हमें उसका अनुभव करने की प्रेरणा देते हैं न कि अपनी वर्तमान पर्याय को ऐसा समझकर पुरुषार्थहीन बनने को।

Statements like "I am the pure soul", "I am the eternal pure soul", or "I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable" apply to our permanent unchanging core (our unchanging side of the soul) not to our current manifestation, our present condition. The learned Acaryas have stated that our soul has possessed, continues to possess and shall always and forever possess the above attributes to inspire us to attain these ideals. Their objective is not to give a false picture of ourselves that results in cessation of all efforts to attain self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

"मैं शुद्धात्मा हूँ" या "मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ" या "मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" इन सभी कथनों से ज़्यादातर लोग एकान्त अर्थ ग्रहण करके (अपनी वर्तमान पर्याय को ही ऐसा समझकर) अपने को दूसरों से ऊँचा मानने लग जाते हैं और अपना अनन्त काल अन्धकारमय तथा दु:खमय बना लेते हैं।

Most people derive only a partial one-sided understanding of statements like "I am the pure soul", "I am the eternal pure soul", or "I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable" and assume that their current manifestation has already achieved the above ideals. They begin considering themselves to be superior to others and ensure that their eternal future shall be dark and sorrowful.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

"मैं शुद्धात्मा हूँ" या "मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ" या "मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" इन सभी कथनों से ज़्यादातर लोग एकान्त अर्थ ग्रहण करके (अपनी वर्तमान पर्याय को ही ऐसा समझकर) अपने को राग-द्वेष और उससे होनेवाले बन्ध से परे मानकर अपना अनन्त काल अन्धकारमय और दु:खमय बना लेते हैं।

Most people derive only a partial one-sided understanding of statements like "I am the pure soul", "I am the eternal pure soul", or "I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable" and assume that their current manifestation has already achieved the above ideals. They think that they are beyond attachment, aversion and the karmic bondage that is a consequence of attachment and aversion, thus ensuring that their eternal future shall be dark and sorrowful.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

"मैं शुद्धात्मा हूँ" या "मैं त्रिकाली ध्रुव शुद्धात्मा हूँ" या "मैं परमपारिणामिक भावमात्र हूँ" इन सभी कथनों से ज़्यादातर लोग एकान्त अर्थ ग्रहण करके (अपनी वर्तमान पर्याय को ऐसा समझकर) ऐसा बोलने/मानने लगते हैं कि मुझमें राग-द्वेष हैं ही नहीं। मैं परम अकर्ता हूँ। और वे लगे रहते हैं घोर सांसारिक कामों में। इस तरह वे अपना अनन्त काल अन्धकारमय और दु:खमय बना लेते हैं।

Most people derive only a partial one-sided understanding of statements like "I am the pure soul", "I am the eternal pure soul", or "I am the sovereign fundamental attribute, which is permanent and unchangeable" and assume that their current manifestation has already achieved the above ideals. They start stating/believing that they are beyond attachment and aversion. That they are non-doers. And they remain immersed in intensely worldly objectives. Thus, they make their eternal future dark and sorrowful.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

निश्चय को दृष्टि में और व्यवहार को कथन और आचरण में रखना चाहिये। मगर कई लोग इसके विपरीत करते देखे जाते हैं। वे निश्चय को सिर्फ़ कथन में रखकर आचरण में शून्य बनकर निश्चयाभासी बन जाते हैं और अपना अनन्त काल अन्धकारमय/दु:खमय बना लेते हैं।

The niścaya naya should be kept in mind and vyavahāra naya should be followed in our talk and conduct. But certain people are observed to do the opposite. They keep niścaya naya only in their speech, their conduct is bereft of any good qualities which turns them into niścayābhāsīs ensuring that their endless future shall become dark/sorrowful.

Niścaya Naya — absolute viewpoint
Vyavahāra Naya — practical viewpoint
Niścayābhāsī — those who misunderstand the niścaya naya and stop making correct efforts on the path of dharma in the illusion that their current manifestation itself is the pure soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मुझे अपनी पूर्णता का अहसास तब हो सकता है जब मुझे दृष्टि अपेक्षा से बाहर से कुछ भी नहीं चाहिये। अर्थात् तब मुझे अपनी आत्मा का अनुभव हो सकता है। तब मैं अन्तर्मुखी हो सकता हूँ।

I can only experience my completeness when my inherent demands and desires for worldly objects cease. Meaning, I can then experience my soul. I can look inwards.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक मुझे दृष्टि अपेक्षा से बाहर से कुछ चाहिये तब तक मैं अपने आप को अधूरा ही अनुभव करूँगा। तब तक मैं विकल्पमुक्त यानी निर्विकल्प नहीं बन सकता।

Till the time I inherently feel the desire for worldly objects, I shall experience my incompleteness and will not become nirvikalpa (self-realised, free from dilemma/desire).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यह सोचना कि यदि मैं सिर्फ़ साक्षीभाव से अपने विकल्प/विचार को देखता रहा (choiceless awareness) तो मुझे आत्मज्ञान हो जायेगा, ग़लत है। क्योंकि हम यह नहीं समझते कि जब तक देखने का भी विकल्प है तब तक आत्मज्ञान नहीं होता।

It is wrong to think that by merely observing our thoughts and desires as a witness (choiceless awareness) shall result in self-realisation. Because we do not realise that as long as one has the desire to even observe something, one cannot attain the experience of the self.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक मेरे अन्दर सांसारिक माँग/अपेक्षा विद्यमान है तब तक सिर्फ़ साक्षीभाव से अपने विकल्प/विचार को देखते रहने (choiceless awareness) से आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होगा। मुझे अन्तर्दृष्टि तभी प्राप्त हो सकती है, जब मेरी कोई भी सांसारिक माँग/अपेक्षा न हो।

As long as worldly desires reside within my soul, merely practising choiceless awareness shall not result in self-realisation. I can only attain the spiritual stage of introspection when I am free from any worldly desires.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे देव-शास्त्र-गुरु-धर्म का आलम्बन शुभ में अटकने के लिये नहीं होता, वह तो शुद्धभाव पाने के लिये होता है। अर्थात् सच्चे देव-शास्त्र-गुरु-धर्म के आलम्बन से सिद्धत्व पाना है न कि संसार।

The support of the true God-scripture-preceptor-dharma is not for remaining stuck in the auspicious, it is for attaining the śuddha bhāva (pure disposition of the soul). Meaning, we have to take the support of the true God-scripture-preceptor-dharma to attain liberation, not worldly success.

Śuddha bhāva — pure disposition of the soul, unblemished by attachment and aversion; experience of the pure soul
Śubha bhāva — auspicious disposition of the soul
Aśubha bhāva — inauspicious disposition of the soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे देव-शास्त्र-गुरु-धर्म के आलम्बन से अगर हम मात्र शुभभाव ही पाते हैं तब शुद्धभावरूपी सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) और मोक्षमार्ग नहीं मिलते। सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) और मोक्षमार्ग नहीं मिलने से अपना संसार यानी दु:खमय जीवन बना रहेगा।

Using the support of the true God-scripture-preceptor-dharma, if we only succeed in attaining the auspicious disposition of the soul, then we do not attain samyagdarśana, which is a manifestation of the śuddha bhāva (the pure disposition of the soul). In the absence of samyagdarśana (self-realisation) and the path of liberation, we shall remain in transmigration, meaning that endless sorrow shall be our future.

Śuddha bhāva — pure disposition of the soul, unblemished by attachment and aversion; experience of the pure soul
Śubha bhāva — auspicious disposition of the soul
Aśubha bhāva — inauspicious disposition of the soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) यानी मोक्षमार्ग मिलने के बाद भी जब हम शुद्धभाव में नहीं रह पा रहे हैं तब नियम से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु-धर्म का आलम्बन लेकर शुभभाव में ही रहना है न कि अशुभभाव में।

Despite attaining samyagdarśana (self-realisation), meaning that despite finding the path of liberation, if we are unable to maintain the pure disposition of the soul, we must take the support of the true God-scripture-preceptor-dharma and remain in the auspicious disposition of the soul, not in the inauspicious disposition.

Śuddha bhāva — pure disposition of the soul, unblemished by attachment and aversion; experience of the pure soul
Śubha bhāva — auspicious disposition of the soul
Aśubha bhāva — inauspicious disposition of the soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग उपयोग (ज्ञान) को खाली करने के चक्कर में निर्विचार होने का प्रयास करते रहते हैं लेकिन जीवनभर आत्मानुभूति नहीं कर पाते। क्योंकि आत्मानुभूति के लिये उपयोग को पर से खाली करने का तरीक़ा यह है कि जब आपकी रुचि बाहर से हटकर अन्दर यानी स्व में होती है तब अपने आप उपयोग पर से खाली होकर स्व का अनुभव कर पाता है। आत्मानुभूति प्राप्त होती है।

To attain a blank state of mind, some people try to attain a stage of thoughtlessness. Such people try all their lives but are unable to experience the soul. Because this is the way to rid the mind of thoughts of external objects for self-realisation - when your interest does not lie in the external and instead lies in the self, your consciousness spontaneously empties itself of external thoughts and experiences itself. You attain self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मानुभूति के लिये उपयोग (ज्ञान) को खाली करने का तरीक़ा हमने अपनी किताब “सम्यग्दर्शन की विधि” के प्रकरण २४ में बताया है। जब उपयोग पर से खाली होकर स्व का अनुभव कर पाता है तभी आत्मानुभूति प्राप्त होती है।

I have explained the way to empty your consciousness for the purpose of self-realisation in chapter 24 of my book "Samyagdarśana Kī Vidhi". Self-realisation can only be achieved when your consciousness spontaneously empties itself of external thoughts and experiences itself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्रों में कहा है कि आबाल-गोपाल सभी को आत्मा अनुभव में आ ही रही है मगर अनादि-बन्ध की वजह से परद्रव्य के साथ एकात्मता होने से जीव अपना अनुभव नहीं कर पाता। इसलिये अपनी (आत्मा की) अनुभूति पाने के लिये पर से प्रीति कम करके स्व में रुचि जागृत करनी पड़ेगी तभी अपना उपयोग पर से हटकर स्व की अनुभूति करेगा।

The scriptures say that everyone, irrespective of their age, is already experiencing their soul. But because of their karmic bondage since beginningless time, they identify themselves with external objects, so they are unable to experience their soul. Hence, to experience the self (self-realisation), they shall have to lessen their fondness for external objects and awaken an interest in the self. Only then will they be able to take their consciousness away from external objects and experience the self.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपनी (आत्मा की) अनुभूति पाने के लिये पर से प्रीति कम करना आवश्यक है। पर से प्रीति कैसे कम होगी इसका विवरण हमने अपनी किताब “सम्यग्दर्शन की विधि” के प्रकरण २४ में दिया है।

It is necessary to lessen our fondness for external objects to experience the self (soul). I have explained the way to lessen the fondness for the external objects in chapter 24 of my book "Samyagdarśana Kī Vidhi".

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोग धनी व्यक्ति को सर्वगुणसम्पन्न मानते हैं। बहुत-से धनी व्यक्ति भी स्वयं को सर्वगुणसम्पन्न मानते हैं। इससे पता चलता है कि बहुमत धन के पक्ष में ही होता है। हालाँकि धन आत्मप्राप्ति में बाधक नहीं है परन्तु धन का पक्ष अवश्य ही आत्मप्राप्ति में बाधक है। क्योंकि धन का पक्ष जीव को उसी के पीछे मन-वचन-काय से लगाता है। ऐसे व्यक्ति की रुचि भी धन के प्रति होती है न कि आत्मा के प्रति।

Most people consider rich people to be sarvaguṇasampanna. Many rich people also think that they are sarvaguṇasampanna. This indicates that the large majority suffers from wealthism. Although possessing wealth does not hold you back from attaining self-realisation, being a wealthist prevents you from attaining self-realisation. Because wealthism drives people to dedicate their mind, speech and body to the pursuit of wealth. Such people's interest too lies in attaining wealth, not in attaining self-realisation.

Sarvagunasampanna - possessing all the best qualities
Wealthism - a pronounced bias towards the rich
Wealthist - one who discriminates between the rich and the poor, always favouring the rich

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से जीव मिथ्यात्वी (अज्ञानी) होने से वह अपने आप को शरीर ही मानता है और आहार, मैथुन, परिग्रह (ज़्यादा से ज़्यादा धन, स्त्री, मकान, जवाहरात इत्यादि इकट्ठा करने का भाव) और भय में ही डूबा रहता है। शरीर से इनके भोग का भाव तीव्र रहता है, जिससे पाप का बन्ध होता है और वे ग़लत संस्कार भी दृढ़ होते रहते हैं जो उसे अनन्त काल तक इस दु:खमय संसार में भटकाने में सक्षम हैं। इसलिये इन सभी ग़लत संस्कारों को कमज़ोर करना भी एक साधना ही है।

Since beginningless time, the one with false belief considers himself to be the body only is immersed in seeking food, sensual desire, parigraha (the desire to collect more and more wealth, women, real estate, jewellery, etc.) and fear. He is strongly impelled to enjoy food, sensual desire, material wealth, etc. with this body which result in the bondage of pāpa karmas and strengthen the false saṃskāras that are capable of causing him to wander in this painful saṃsāra for an eternity. Hence, even weakening all these false saṃskāras is a form of sādhanā.

Parigraha — the desire to collect more and more wealth, women, real estate, jewellery, etc.
Saṃskāra — conditioning, upbringing, rearing, mental impression, mental makeup, forming the mind, normative values
Sādhanā — process of constant and focused correct efforts for self-realisation and liberation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) की प्राप्ति में पर के प्रति तीव्र भोक्ताभाव एक बड़ा अवरोध है। जीव उसे हर हाल में बनाये रखना चाहता है क्योंकि उसी से वह अपना अस्तित्व मानता है और उसी में अपनी ख़ुशी भी मानता है। उसे यह पता नहीं कि पर से प्राप्त ख़ुशी तो सुखाभास मात्र है, सच्चा सुख तो आत्मा में ही है।

The intense desire to indulge in physical delectations is a great impediment in the attainment of samyagdarśana (self-realisation). People are desperate to maintain their intense desire to indulge in sensual delectation because they believe such sensual indulgence to be an indication of their existence. Also, people think that such sensual indulgence is the way to attain happiness. They do not realise that any happiness derived from external sources is merely an illusion of happiness. True bliss lies in the soul itself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी जीव को अपनी अच्छी सेहत के लिये भी कुछ खाने की चीज़ें छोड़ने को कहा जाता है तब वह जीव अनेक बहाने बनाकर कहता है कि मैं यह नहीं छोड़ सकता। जब वह जीव दिखनेवाले शरीर के हित के लिये भी कुछ चीज़ें खाना छोड़ नहीं सकता तब वह जीव नहीं दिखनेवाली आत्मा के हित के लिये भोगेच्छा कैसे छोड़ सकता है? नहीं छोड़ सकता, यही अपनी अनादि की कहानी है।

When someone is told to give up eating certain foods for the sake of his health, he makes all sorts of excuses and expresses his inability to give up those foods. When he cannot give up anything for the sake of his body which is visible, how will he give up his sensual desire for the sake of his soul, which is invisible? He will not be able to give them up. This is the story of our lives, since beginningless time.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से अज्ञानी को भोक्ताभाव के दृढ़ संस्कार हैं। उन ग़लत संस्कारों को तोड़ने के लिये आत्मप्राप्ति के लक्ष्य से बारह भावनाओं का चिन्तन-मनन करना चाहिये। भगवान के स्वरूप का चिन्तन-मनन करना चाहिये।

Since beginningless time, the ignorant one has firm saṃskāras of sensual indulgence. In order to break those false saṃskāras, he will have to contemplate on the twelve bhāvanās for the purpose of attaining self-realisation. He must contemplate on the true nature of God.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) की प्राप्ति हेतु भोग नहीं अटकाते परन्तु भोगेच्छा अवश्य अटकाती है। इसलिये पहले भोगेच्छा छोड़ने का प्रयास करना चाहिये न कि भोग। क्योंकि भोग छोड़ना आसान है मगर भोगेच्छा छोड़ना कठिन है।

It is not the act of sensual indulgence itself that obstructs our attainment of samyagdarśana (self-realisation) but the desire for sensual indulgence that obstructs our attainment of samyagdarśana. Hence, one must first try to give up the desire for sensual indulgence before giving up the indulgence itself. Because giving up the indulgence is easy but giving up the desire for indulgence is difficult.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी जीव को यह आभास हो जाता है कि सच्चा सुख तो मेरी आत्मा में ही है, तब उसकी मृगतृष्णा जैसे भ्रामक सुख के पीछे की दौड़ रुक जाती है। वह दौड़ रुकने से भी उसे शान्ति का अनुभव होता है, मगर उसे आत्मज्ञान नहीं मान लेना चाहिये।

When a person realises that true happiness lies in his soul, then he stops chasing the mirage of illusory happiness. Stepping away from this chase gives him a sense of relief but this should not be considered self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी जीव की मृगतृष्णा जैसे भ्रामक सुख के पीछे की दौड़ रुक जाये तो फिर उसे अपनी आत्मा के लक्षण अर्थात् ज्ञान-दर्शन से अपने को जोड़ना चाहिये। वह ऐसे कि मैं यह जाननेवाला मात्र हूँ। मैं ज्ञायक हूँ। इस तरह अपने सच्चे अस्तित्व का अनुभव करना चाहिये।

After a person stops chasing the mirage of illusory happiness, he must connect himself with the attributes of his soul, that is - knowledge and perception. How, by telling himself that he is merely the knower. Thus, he must experience his true existence.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।